

सूरह वाकिआ - 56



सूरह वाकिआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 96 आयत है।

- वाकिआ प्रलय का एक नाम है। जो इस सूरह की प्रथम आयत में आया है। जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में प्रलय का भ्यावः चित्रण है जिस में लोगों को तीन भागों में कर दिया जायेगा। फिर प्रत्येक के परिणाम को बताया गया है। और उन तथ्यों का वर्णन किया गया है जिन से प्रतिफल के प्रति विश्वास होता है।
- सूरह के अन्त में कुर्आन से विमुख होने पर झंझोंड़ा गया है कि कुर्आन जो प्रलय तथा प्रतिफल की बातें बता रहा है वह सर्वथा अल्लाह का संदेश है। उस में शैतान का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
- अन्त में मौत के समय की विवशता का वर्णन करते हुये अन्तिम परिणाम से सावधान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब होने वाली हो जायेगी।
2. उस का होना कोई झूठ नहीं है।
3. नीचा-ऊँचा करने^[1] वाली।
4. जब धरती तेज़ी से डोलने लगेगी।
5. और चूर-चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۖ
لَيْسَ لَوْعَتَيْهَا كَاذِبَةٌ ۖ
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۖ
إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ۖ
وُكِبَتِ الْجِبَالُ كُبًّا ۖ

1 इस से अभिप्राय प्रलय है। जो सत्य के विरोधियों को नीचा कर के नरक तक पहुँचायेगी। तथा आज्ञाकारियों को स्वर्ग के ऊँचे स्थान तक पहुँचायेगी। आरंभिक आयतों में प्रलय के होने की चर्चा, फिर उस दिन लोगों के तीन भागों में विभाजित होने का वर्णन किया गया है।

6. फिर हो जायेंगे विखरी हुई धूल।
7. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।
8. तो दायें वाले, तो क्या है दायें वाले!^[1]
9. और बायें वाले, तो क्या है बायें वाले!
10. और आग्रगामी तो आग्रगामी ही हैं।
11. वही समीप किये^[2] हुये हैं।
12. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।
13. बहुत से अगले लोगों में से।
14. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।
15. स्वर्ण से बुने हुये तख्तों पर।
16. तकिये लगाये उन पर एक- दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।
17. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।
18. प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।
19. न तो सिर चकरायेगा उन से न वह निर्बोध होंगी।
20. तथा जो फल वह चाहेंगे।
21. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
22. और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
23. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।

- مَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ۝
وَأَنْتُمْ أَزْوَاجٌ ثَلَاثَةٌ ۝
فَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝
وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۝
وَالشُّبُقُونَ الشُّبُقُونَ ۝
أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝
فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۝
ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ۝
وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۝
عَلَى سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ ۝
مُنَكَّبِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۝
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ۝
بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ۝
لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنَزَّفُونَ ۝
وَقَالَهُمْ مِمَّا يَنْحَرُونَ ۝
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝
وَحُورٌ عِينٌ ۝
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝

1 दायें वालों से अभिप्राय वह हैं जिन का कर्मपत्र दायें हाथ में दिया जायेगा। तथा बायें वाले वह दुराचारी होंगे जिन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।

2 अर्थात् अल्लाह के प्रियवर और उस के समीप होंगे।

24. उस के बदले जो वह (संसार में) करते रहे। جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾
25. नहीं सुनैंगे उन में व्यर्थ बात और न पाप की बात। لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِيَمًا ﴿٢٥﴾
26. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी होगी। إِلَّا قِيلَ سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾
27. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य शाली) हैं दायें वाले! وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ذُو الْأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾
28. बिन काँटे की बैरी में होंगे। فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾
29. तथा तह पर तह केलों में। وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٢٩﴾
30. फैली हुई छाया^[1] में। وَظِلِّ مَمْدُودٍ ﴿٣٠﴾
31. और प्रवाहित जल में। وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾
32. तथा बहुत से फलों में। وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾
33. जो न समाप्त होंगे, न रोके जायेंगे। لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾
34. और ऊँचे बिस्तर पर। وَفُورٍ مَّرْقُوعٍ ﴿٣٤﴾
35. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों को एक विशेष रूप से। إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾
36. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ। فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾
37. प्रेमिकायें समायु। عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾
38. दाहिने वालों के लिये। لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾
39. बहुत से अगलों में से होंगे। ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾
40. तथा बहुत से पिछलों में से। وَثَلَاثَةٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾

1 हदीस में है कि स्वर्ग में एक वृक्ष है जिस की छाया में सवार सौ वर्ष चलेगा फिर भी वह समाप्त नहीं होगी। (सहीह बुखारी: 4881)

41. और बायें वाले, क्या हैं बायें वाले!
42. वह गर्म वायु तथा खौलते जल में (होंगे)।
43. तथा काले धूवें की छाया में।
44. जो न शीतल होगा और न सुखदा।
45. वास्तव में वह इस से पहले (संसार में) सम्पन्न (सुखी) थे।
46. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।
47. तथा कहा करते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पूनः जीवित होंगे?
48. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?
49. आप कह दें कि निःसंदेह सब अगले तथा पिछले।
50. अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।
51. फिर तुम, हे कुपथो! झुठलाने वालो!!
52. अवश्य खाने वाले हो जक्कूम (थोहड़) के वृक्ष से।^[1]
53. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।
54. तथा पीने वाले हो उस पर से खौलता जल।

وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ فَمَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝
فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝

وَقَطْرٍ مِنْ يَحْوِيٍّ ۝

لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۝

وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۝

وَكَانُوا يَقُولُونَ هَذَا مِتْنَانَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۝
وَأَنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝

أَوَلَمْ نَكُنْ أَوْلَ الْأَوَّلِينَ ۝

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝

لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَنتُمُ الصَّاكِلُونَ الْكَذِبُونَ ۝

لَا تَكُونُونَ مِنْ شَجَرٍ مِنْ زُقُومٍ ۝

فَمَا لَتُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝

فَتَشْرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝

1 (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 62)

55. फिर पीने वाले हो प्यासे^[1] ऊँट के समान।

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ ۝

56. यही उन का अतिथि-सत्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

هَذَا نُزْلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝

57. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?

مَنْ خَلَقَكُمْ فَلَوْلَا تَصَدَّقُونَ ۝

58. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ۝

59. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

وَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ مَعْنُ الْخُلُقُونَ ۝

60. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम विवश होने वाले नहीं हैं।

مَنْ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا مَعْنُ بِمُسْبِقِينَ ۝

61. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते।

عَلَى أَنْ يُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَتُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

62. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते?

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝

63. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْمِلُونَ ۝

64. क्या तुम उसे उगाते हो या हम उसे उगाने वाले हैं?

وَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ مَعْنُ الزَّرْعُونَ ۝

65. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۝

1 आयत में प्यासे ऊँटों के लिये ((हीम)) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह ऊँट में एक विशेष रोग होता है जिस से उस की प्यास नहीं जाती।

66. वस्तुतः हम दण्डित कर दिये गये।

إِنَّا الْمَغْرُمُونَ ۝

67. बल्कि हम (जीविका से) वंचित कर दिये गये।

بَلْ عَنْ مَحْرُومُونَ ۝

68. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝

69. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।

ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ عَنِ الْمُنْزِلُونَ ۝

70. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते?

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أَجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝

71. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हो।

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝

72. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं?

ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَهَا أَمْ عَنِ النَّشْئُونَ ۝

73. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।

عَنْ جَعَلْنَاهَا تَذْكُرًا وَفِتْنًا ۝

74. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

75. मैं शपथ लेता हूँ सितारों के स्थानों की!

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْقِعِ النُّجُومِ ۝

76. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।

وَأِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝

77. वास्तव में यह आदरणीय^[1] कुर्आन है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۝

78. सुरक्षित^[2] पुस्तक में है।

فِي كِتَابٍ مُّكْتَبٍ ۝

1 तारों की शपथ का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आकाश के तारों की एक दृढ़ व्यवस्था है उसी प्रकार यह कुर्आन भी अति ऊँचा तथा सुदृढ़ है।

2 इस से अभिप्रायः ((लौहे महफूज़)) है।

79. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं।^[1]
80. अवतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।
81. फिर क्या तुम इस वाणी (कुर्आन) की अपेक्षा करते हो?
82. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?
83. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं।
84. और तुम उस समय देखते रहते हो।
85. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परन्तु तुम नहीं देख सकते।
86. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।
87. तो उस (प्राण) को फेर क्यों नहीं लाते, यदि तुम सच्चे हो?
88. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।
89. तो उस के लिये सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरी स्वर्ग है।
90. और यदि वह दायें वालों में से है।
91. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।^[2]
92. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथों में से।

- لَا يَسْتَفْهِمُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾
- تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾
- أَفَمَهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ﴿٨١﴾
- وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ مُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾
- فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُقُوفُ ﴿٨٣﴾
- وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٨٤﴾
- وَعَنْ أَقْرَبٍ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾
- فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾
- تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾
- فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾
- فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ﴿٨٩﴾
- وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾
- فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾
- وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾

1 पवित्र लोगों से अभिप्राय: फरिश्ते हैं। (देखिये: सूरह अबस, आयत: 15, 16)

2 अर्थात् उस का स्वागत सलाम से होगा।

93. तो अतिथि सत्कार है खौलते पानी से।
 94. तथा नरक में प्रवेश।
 95. वास्तव में यही निश्चय सत्य है।
 96. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का
 वर्णन करें अपने महा पालनहार के
 नाम की।

فَنَزَّلُ مِنْ حَيْثُ ۝
 وَتَصْلِيَةٌ جَهِيمٍ ۝
 إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝
 فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

